15 मई, 2015

स्मृति

मीठे बच्चे: तुम पतित आत्माऐं हों इसलिए ही तुमने मुझे पुकारा है कि आकर हमें पावन बनाओ । अब मैं कहता हूँ, मुझे याद करो और पावन बनो ! यहां हरेक आकर पढ़ाई नहीं करेगा । वही जिन्होंने कल्प पहले पढ़ाई की होगी वही फिर से आऐंगे । ऐसी आत्माऐं कहेंगी: बाबा, हम आपसे क्ल्प पहले मिले हैं; हम यहां पढ़ने आऐं हैं; हम याद की यात्रा सीखने आऐं हैं ।
मीठे बाबा, पूरे दिन मैं इस बात की स्मृति रखूंगा: कि आप हम बच्चों को पतित से पावन बनने का रास्ता बताने आऐ हो । अपने पापों को भस्म करने के लिए, याद के साथ-साथ हमें अपने वर्तमान जन्म के पाप कर्मों को और दान व पुण्य कर्मों को स्वीकारना होगा ।

स्मृर्थी

ऊपर की स्मर्ती से प्राप्त होने वाली शक्ति से मैं स्वयं को निरंतर सशक्त अनुभव कर रहा हूँ । मुझमें इस बात की जागृती आ रही है कि मेरी स्मृर्ती से मेरा स्वमान बढ़ता जा रहा है । मैं इस बात पर ध्यान देता हूँ कि मेरी स्मृर्ती से मुझमें शक्ति आ रही है और इस परिवर्तनशील संसार में मैं समभाव और धीरज से कार्य करता हूँ ।

मनोवृत्ति

बाबा आत्मा से: जो तुम्हारा है वह मेरा है और जो मेरा है वह तुम्हारा है । तुम तन-मन-धन से मेरे सहयोगी बनते हो और बदले में तुम यह पाते हो ।
अपने तन-मन और धन का ट्रस्टी बन कर रहने का मेरा दृढ़ संकल्प है ।

दृष्टि

बाबा आत्मा से: लोग कहते हैं कि इस अद्भुत नाटक को रचने के लिए परमात्मा ने एक रूप धारण किया । इसलिए वह पार्ट अवश्य बजाएगा । भगवान के रूप को देखो ! उसे आत्मा की नज़र से देखो । उसे बुद्धी की नज़र से पहचानो । अपने नैनों के लेंस से उसके गुणों और शक्तियों की किरणें फैलाओ ।
मेरा दृढ़ संकल्प है कि मुझे अपने नैनो में छलकते प्रेम से भगवान का साक्षात्कार कराना है । इसके लिए मुझे निरंतर उस एक को याद करना होगा, ताकि उसकी अव्यभिचारी याद दूसरों की आत्माओं को छू ले । मैं केवल उसे ही प्रेम करूंगा ताकि उसका प्रेम मेरी आंखों से छलक सके और दूसरों के हृदयों को छू ले ।

लहर उत्पन्न करना

मुझे शाम 7-7:30 के योग के दौरान पूरे ग्लोब पर पावन याद और वृत्ति की सुंदर लहर उत्पन्न करने में भाग लेना है और मन्सा सेवा करनी है । उपर की स्मृर्ति, मनो-वृत्ति और दृष्टि का प्रयोग करके विनिम्रता से निमित् बनकर मैं पूरे विश्व को सकाश दूँगा ।